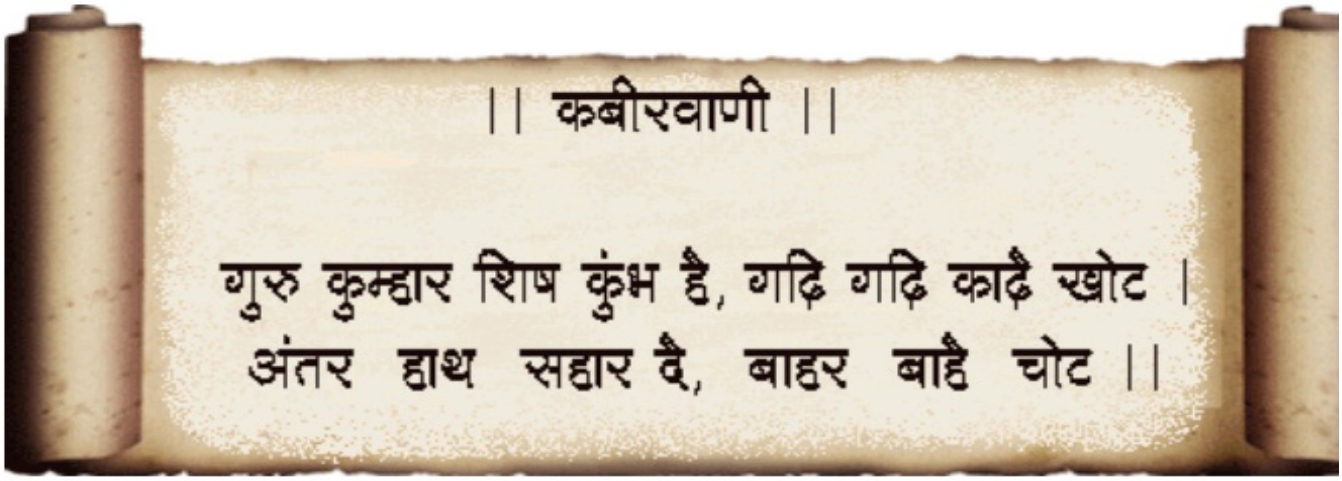

गुरु कुम्हार शिष कुंभ है, गढ़ि गढ़ि काढ़ै खोट ।
अंतर हाथ सहार दै, बाहर बाहै चोट ।।

गुरु कुम्हार है, और शिष्य घड़ा है; गुरु भीतर से हाथ का सहारा देक
और बाहर से चोट मार मार कर तथा गढ़-गढ़ कर शिष्य की बुरा
को निकालते हैं।

जिस तरह कुम्हार अनगढ मिट्टी को तराशकर उसे सुंदर घडे व
शक्ल दे देता है, उसी तरह गुरु भी अपने शिष्य को हर तरह का ज्ञा
देकर उसे विद्वान और सम्मानीय बनाता है। हां, ऐसा करते हुए गु
अपने शिष्यों के साथ कभी-कभी कडाई से भी पेश आ सकता ह
लेकिन जैसे एक कुम्हार घडा बनाते समय मिट्टी को कडे हाथों
गूंथना जरूरी समझता है, ठीक वैसे ही गुरु को भी ऐसा करन
पडता है। वैसे, यदि आपने किसी कुम्हार को घडा बनाते समय ध्या
से देखा होगा, तो यह जरूर गौर किया होगा कि वह बाहर से उ
थपथपाता जरूर है, लेकिन भीतर से उसे बहुत प्यार से सहारा भ
देता है।